>

Title: Plight of 19 lakh eunuchs living in our country.

SHRIMATI ANNU TANDON (UNNAO): Sir, I am going to talk about a lot of people who are completely marginalized in our country. So, please allow me to complete the whole submission. सभापति महोदय, आज मैं एक अत्यंत आवश्यक और आत्मा को छू लेने वाली अपने देश के 19 लाख किन्नरों की दुखद स्थिति के बारे में आप के माध्यम से कहना चाहती हूं। हाल में मैंने एक फिल्म देखी जो किन्नरों की फिल्म की कहानी है। 11 जून, 2011, यह डा. पीयुष सक्सेना की फिल्म है "और नेहा नहीं बिक सकी"। यह अजमेर में रिलीज हुई थी जहां 500 किन्नर मौजूद थे। इस 55 मिनट की डाक्यूमेंटरी फिल्म में किन्नर यानी आम भाषा में असामान्य तरीके से जिन्हें हिजड़ा कहा जाता है उनकी दयनीय बंधक जिन्दगी के बारे में यह फिल्म है। किन्नर एक बहुत ही गोपनीय जिंदगी जीते हैं। ज्यादा न जानने की वजह से इन्हें तिरस्कार की नजर से देखा जाता है। किन्नर जब घर छोड़ता है तो यह घर से निकाला जाता है और गुरू पर आश्रित हो जाता है। यह उसी गुरू की हर बात मानता है। आप और हम लोगों से उसका संपर्क बहुत सीमित होता है। उसकी दशा यह है कि वह समाज से किनारे त्यागी हुई जिंदगी जीता है जिसमें न परिवार का प्रेम है और न आदर है बल्कि डरी, सहमी और धिक्कारी हुई जिंदगी है। वे दूसरों की दया, भीख और अपमानजनक संवेदनशीलता द्वारा दो रोटी कमा पाता है।

महोदय, किन्नर भी जीना चाहते हैं। वे मेहनत से गुजर-बसर करना चाहते हैं पर उन्हें कोई इज्जत की नौकरी नहीं देता है। अगर वे मेहनत, मजदूरी और नौकरी करते भी हैं तो समाज अकेला पाकर उनका मजाक उड़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ता है। इनकी इस जिंदगी की दुर्दशा और दयनीय हालत के जिम्मेदार हम लोग ही हैं। इनको इंसान की जिंदगी और बराबर का मौका देना और मुख्यधारा में लाने की जिम्मेदारी हमारी है। हमारी जैसी कितनी ही माँ हैं जिन्होंने ऐसे ही लोगों को जन्म दिया है। हमारी ही जैसी कोई माँ होगी जिसने ऐसे किसी किन्नर को जन्म दिया है।

महोदय, आज मैं आप के द्वारा सरकार से तीन चीजों की मांग इन के लिए करती हूं। पहला, इन्हें वोटर कार्ड बनाने की सहुलियत दी जाए क्योंकि इनके पास अपनी कोई पहचान नहीं होती है। सिवाय उनके गुरू के, इनके पास अपना कोई पता का प्रमाण नहीं होता है। उन्हें मोबाइल का सिम कार्ड लेना भी मुश्किल होता है। दूसरा, क्या हम उनकी भीख मांगने की मजबूरी को कानूनी स्वरूप या पुनर्वास का कोई अवसर दे सकते हैं? इसके बारे में सरकार सोचे। तीसरा, इनको किन्नर की दुनिया में प्रवेश करने के लिए जो ऑपरेशन की जरूरत पड़ती है जिसे ये निर्वाण कहते हैं उसे कानूनी स्वीकृति देना बहुत जरूरी है ताकि वे झोलाछाप डाक्टरों से मुक्ति पा सकें। महोदय, जीरो अवर में यह पूर्ण चर्चा संभव नहीं है पर आप के द्वारा किन्नरों को मुख्य धारा में लाने के लिए मैं इस सदन से इस पर पूरी चर्चा चाहती हूं। धन्यवाद।